Job

Chapter 6

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

וַיַּעַן	אִיּוֹב	וַיֹּאמַר׃
और-उत्तर-दिया	अय्यूब-ने	और-कहा
	H0347	H0559

> फिर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा,

2

לוּ	שָׁקוֹל	יִשָּׁקֵל	כַּעְשִׂי	]והיתי[	)וְהַוָּתִי(	בְּמֹאזְנַיִם	יִשְׂאוּ־	יָחַד׃
काश	तोलकर-	तोला-जाता	मेरा-क्रोध	और-मेरी-विपत्ति	और-मेरी-विपत्ति	तराजू-में	उठाई-जाती-	एक-साथ
H3863	H8254	H8254		H1962	H1962	H3976	H5375	

> “यदि मेरी पीड़ा को तौला जा सके और सभी वेदनाओं को तराजू में रख दिया जाये, तभी तुम मेरी व्यथा को समझ सकोगे।

3

כִּי־	עַתָּה	מֵחוֹל	יַמִּים	יִכְבָּד	עַל־	כֵּן	דְּבָרַי	לָעוּ׃
क्योंकि-	अब	बालू-से	समुद्रों-के	भारी-होगा	पर-	इसलिए	मेरे-शब्द	गलत-हैं
	H6258	H2344	H3220	H3513			H1697	

> मेरी व्यथा समुद्र की समूची रेत से भी अधिक भारी होंगी। इसलिये मेरे शब्द मूर्खतापूर्ण लगते हैं।

4

כִּי	חִצֵּי	שַׁדַּי	עִמָּדִי	אֲשֶׁר	חֲמָתָם	שֹׁתָה	רוּחִי	בִּעוּתֵי	אֱלוֹהַּ	יַעַרְכוּנִי׃
क्योंकि	तीर	सर्वशक्तिमान-के	मेरे-साथ	जिनका	उनका-ज़हर	पीती-है	मेरी-आत्मा	भय	एलोहा-के	सजाते-हैं-मुझे
	H2671	H7706	H5978		H2534	H8354	H7307	H1161	H0433	

> सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बाण मुझ में बिधे हैं और मेरा प्राण उन बाणों के विष को पिया करता है। परमेश्वर के वे भयानक शस्त्र मेरे विरुद्ध एक साथ रखी हुई हैं।

5

הֲיִנְהַק־	פֶּרֶא	עֲלֵי־	דֶשֶׁא	אִם	יִגְעֶה־	שּׁוֹר	עַל־	בְּלִילוֹ׃
क्या-रेंकता-है-	जंगली-गदहा	पर-	घास	या	रंभाता-है-	बैल	पर-	अपने-चारे
H5101	H6501		H1877		H1600	H7794		H1098

> तेरे शब्द कहने के लिये आसान हैं जब कुछ भी बुरा नहीं घटित हुआ है। यहाँ तक कि बनैला गधा भी नहीं रेंकता यदि उसके पास घास खाने को रहे और कोई भी गाय तब तक नहीं रम्भाती जब तक उस के पास चरने के लिये चारा है।

6

הֲיֵאָכֵל	תָּפֵל	מִבְּלִי־	מֶלַח	אִם־	יֶשׁ־	טַעַם	בְּרִיר	חַלָּמוּת׃
क्या-खाया-जाएगा	फीका	बिना-	नमक	या-	है-	स्वाद	लार-में	अंडे-के-सफ़ेदी
H0398		H1097	H4417		H3426	H2940	H7388	H2495

> भोजन बिना नमक के बेस्वाद होता है और अण्डे की सफेदी में स्वाद नहीं आता है।

7

מֵאֲנָה	לִנְגּוֹעַ	נַפְשִׁי	הֵמָּה	כִּדְוֵי	לַחְמִי׃
इनकार-करती-है	छूने-को	मेरी-जान	वे	रोग-की-तरह	मेरी-रोटी
H3985	H5060	H5315	H1992	H1741	H3899

> इस भोजन को छूने से मैं इन्कार करता हूँ। इस प्रकार का भोजन मुझे तंग कर डालता है। मेरे लिये तुम्हारे शब्द ठीक उसी प्रकार के हैं।

8

מִי־	יִתֵּן	תָּבוֹא	שֶׁאֱלָתִי	וְתִקְוָתִי	יִתֵּן	אֱלוֹהַּ׃
कौन-	दे	आए	मेरी-विनती	और-मेरी-आशा	दे	एलोहा
H4310	H5414	H0935	H7596		H5414	H0433

> “काश! मुझे वह मिल पाता जो मैंने माँगा है। काश! परमेश्वर मुझे दे देता जिसकी मुझे कामना है।

9

וְיֹאֵל	אֱלוֹהַ	וִֽידַכְּאֵנִי	יַתֵּר	יָדוֹ	וִֽיבַצְּעֵנִי׃
और-चाहे	एलोहा	और-कुचले-मुझे	खोले	अपना-हाथ	और-काट-डाले-मुझे
H2974	H0433	H1792		H3027	H1214

> काश! परमेश्वर मुझे कुचल डालता और मुझे आगे बढ़ कर मार डालता।

10

וּתְהִי	עוֹד	נֶחָמָתִי	וַאֲסַלְּדָה	בְחִילָה	לֹא	יַחְמוֹל	כִּי־	לֹא	כִחַדְתִּי	אִמְרֵי	קָדוֹשׁ׃
और-हो	अभी	मेरी-सांत्वना	और-उछलूँ	पीड़ा-में	नहीं	वह-तरस-करे	क्योंकि-	नहीं	छिपाया-मैंने	वचन	पवित्र-के
H1961	H5750	H5165	H5539		H3808	H2550		H3808	H3582	H0561	H6918

> यदि वह मुझे मारता है तो एक बात का चैन मुझे रहेगा, अपनी अनन्त पीड़ा में भी मुझे एक बात की प्रसन्नता रहेगा कि मैंने कभी भी अपने पवित्र के आदेशों पर चलने से इन्कार नहीं किया।

11

מַה־	כֹּחִי	כִּי־	אֲיַחֵל	וּמַה־	קִצִּי	כִּי־	אַאֲרִיךְ	נַפְשִׁי׃
क्या-	मेरी-शक्ति	कि-	मैं-इंतज़ार-करूँ	और-क्या-	मेरा-अंत	कि-	मैं-बढ़ाऊँ	मेरी-जान
H4100			H3176	H4100	H7093		H0748	H5315

> “मेरी शक्ति क्षीण हो चुकी है अत: जीते रहने की आशा मुझे नहीं है। मुझ को पता नहीं कि अंत में मेरे साथ क्या होगा इसलिये धीरज धरने का मेरे पास कोई कारण नहीं है।

12

אִם־	כֹּחַ	אֲבָנִים	כֹּחִי	אִם־	בְּשָׂרִי	נָחוּשׁ׃
या-	शक्ति	पत्थरों-की	मेरी-शक्ति	या-	मेरा-मांस	पीतल
		H0068			H1320	H5153

> मैं चट्टान की भाँति सुदृढ़ नहीं हूँ। न ही मेरा शरीर काँसे से रचा गया है।

13

הַאִם	אֵין	עֶזְרָתִי	בִי	וְתֻשִׁיָּה	נִדְּחָה	מִמֶּנִּי׃
क्या	नहीं	मेरी-सहायता	मुझमें	और-सफलता	भगाई-गई	मुझसे
	H0369	H5833		H8454	H5080	

> अब तो मुझमें इतनी भी शक्ति नहीं कि मैं स्वयं को बचा लूँ। क्यों क्योंकि मुझ से सफलता छीन ली गई है।

14

לַמָּס	מֵרֵעֵהוּ	חָסֶד	וְיִרְאַת	שַׁדַּי	יַעֲזוֹב׃
पिघलनेवाले-को	अपने-मित्र-से	दया	और-डर	सर्वशक्तिमान-का	छोड़ता-है
H4523	H7453		H3374	H7706	

> “क्योंकि वह जो अपने मित्रों के प्रति निष्ठा दिखाने से इन्कार करता है। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर का भी अपमान करता है।

15

אַחַי	בָּגְדוּ	כְמוֹ־	נָחַל	כַּאֲפִיק	נְחָלִים	יַעֲבֹרוּ׃
मेरे-भाई	धोखा-दिए	जैसे-	नाला	नाले-की-तरह	नाले	बह-जाते-हैं
H0251	H0898	H3644		H0650		

> किन्तु मेरे बन्धुओं, तुम विश्वासयोग्य नहीं रहे। मैं तुम पर निर्भर नहीं रह सकता हूँ। तुम ऐसी जलधाराओं के सामान हो जो कभी बहती है और कभी नहीं बहती है। तुम ऐसी जलधाराओं के समान हो जो उफनती रहती है।

16

הַקֹּדְרִים	מִנִּי־	קָרַח	עָלֵימוֹ	יִתְעַלֶּם־	שָׁלֶג׃
अंधेरे-होनेवाले	से-	बर्फ़	उन-पर	छिप-जाती-है-	हिम
H6937		H7140		H5956	H7950

> जब वे बर्फ से और पिघलते हुए हिम सा रूँध जाती है।

17

בְּעֵת	יְזֹרְבוּ	נִצְמָתוּ	בְּחֻמּוֹ	נִדְעֲכוּ	מִמְּקוֹמָם׃
जब	गर्म-होते-हैं	सूख-जाते-हैं	गर्मी-में	बुझ-जाते-हैं	अपने-स्थान-से
H6256	H2215	H6789	H2527	H1846	H4725

> और जब मौसम गर्म और सूखा होता है तब पानी बहना बन्द हो जाता है, और जलधाराऐं सूख जाती हैं।

וְיֹאבֵֽדוּ׃	בַתֹּ֣הוּ	יַעֲל֖וּ	דַּרְכָּ֑ם	אָרְח֣וֹת	יִ֭לָּפְתוּ	18
और-नाश-होते-हैं	शून्यता-में	चढ़ते-हैं	उनके-मार्ग-के	रास्ते	मुड़-जाते-हैं	
H0006	H8414	H5927	H1870	H0734	H3943	

व्यापारियों के दल मरुभूमि में अपनी राहों से भटक जाते हैं और वे लुप्त हो जाते हैं।

לָֽמוֹ׃	קִוּוּ־	שְׁבָ֗א	הֲלִיכֹ֥ת	תֵּמָ֑א	אָרְח֣וֹת	הִ֭בִּיטוּ	19
उनके-लिए	इंतज़ार-करते-थे-	शबा-के	यात्री	तेमा-के	कारवाँ	देखे	
		H7614	H1979	H8485	H0734	H5027	

तेमा के व्यापारी दल जल को खोजते रहे और शबा के यात्री आशा के साथ देखते रहे।

וַיֶּחְפָּֽרוּ׃	עָ֝דֶ֗יהָ	בָּ֥אוּ	בָטָ֑ח	כִּֽי־	בֹּ֥שׁוּ	20
और-निराश-हुए	उसके-पास	आए	भरोसा-था	क्योंकि-	लज्जित-हुए	
H2659	H5704	H0935	H0982		H0954	

वे आश्वत थे कि उन्हें जल मिलेगा किन्तु उन्हें निराशा मिली।

וַתִּירָֽאוּ׃	חֲ֝תַ֗ת	תִּרְא֥וּ	)לֹ֑וֹ(	]לא[	הֱיִ֣יתֶם	עַ֭תָּה	כִּֽי־	21
और-डरते-हो	भय	देखते-हो-तुम	उसके-लिए	उसके-लिए	हो-गए-हो-तुम	अब	क्योंकि-	
H3372	H2866	H7200		H3808	H1961	H6258		

अब तुम उन जलधाराओं के समान हो। तुम मेरी यातनाओं को देखते हो और भयभीत हो।

בַּעֲדִֽי׃	שִׁחֲד֥וּ	וּ֝מִכֹּחֲכֶ֗ם	לִ֑י	הָ֣בוּ	אָ֭מַרְתִּי	הֲכִי־	22
मेरे-लिए	रिश्वत-दो	और-अपनी-सम्पत्ति-से	मुझे	दो	कहा-मैंने	क्या-	
H1157	H7809			H3051	H0559		

क्या मैंने तुमसे सहायता माँगी नहीं। किन्तु तुमने मुझे अपनी सम्मति स्वतंत्रता पूर्वक दी।

תִּפְדּֽוּנִי׃	עָ֝רִיצִ֗ים	וּמִיַּ֥ד	צָ֑ר	מִיַּד־	וּמַלְּט֥וּנִי	23
छुड़ाओ-मुझे	अत्याचारियों	और-हाथ-से	शत्रु	हाथ-से-	और-छुड़ाओ-मुझे	
H6299	H6184	H3027		H3027	H4422	

क्या मैंने तुमसे कहा कि शत्रुओं से मुझे बचा लो और क्रूर व्यक्तियों से मेरी रक्षा करो।

לִֽי׃	הָבִ֥ינוּ	שָּׁ֝גִ֗יתִי	וּמַה־	אַחֲרִ֑ישׁ	וַאֲנִ֣י	ה֭וֹרוּנִי	24
मुझे	समझाओ	भटका-मैं	और-क्या-	चुप-रहूँगा	और-मैं	सिखाओ-मुझे	
	H0995	H7686	H4100		H0589		

“अत: अब मुझे शिक्षा दो और मैं शान्त हो जाऊँगा। मुझे दिखा दो कि मैंने क्या बुरा किया है।

מִכֶּֽם׃	הוֹכֵ֣חַ	יוֹכִ֖יחַ	וּמַה־	יֹ֑שֶׁר	אִמְרֵי־	נִּמְרְצ֥וּ	מַה־	25
तुम-से	डाँटना	डाँटता-है	और-क्या-	सीधाई-के	वचन-	दर्दनाक-हैं	कितने-	
	H3198	H3198	H4100	H3476	H0561	H4834	H4100	

सच्चे शब्द सशक्त होते हैं किन्तु तुम्हारे तर्क कुछ भी नहीं सिद्ध करते।

נֹאָֽשׁ׃	אִמְרֵ֥י	וּ֝לְר֗וּחַ	תַּחְשֹׁ֑בוּ	מִלִּ֣ים	הַלְהוֹכַ֣ח	26
निराशा-के	वचन	और-हवा-को	सोचते-हो-तुम	शब्दों	क्या-डाँटने-को	
H2976	H0561	H7307	H2803	H4405	H3198	

क्या तुम मेरी आलोचना करने की योजनाऐं बनाते हो क्या तुम इससे भी अधिक निराशापूर्ण शब्द बोलोगे

רֵֽיעֲכֶֽם׃	עַל־	וְ֝תִכְר֗וּ	תַּפִּ֑ילוּ	יָת֣וֹם	עַל־	אַף־	27
अपने-मित्र	पर-	और-खोदते-हो	गिराते-हो-तुम	अनाथ	पर-	हाँ-	
H7453			H5307	H3490		H0637	

यहाँ तक कि तुम जुऐ में उन बच्चों की वस्तुओं को छीनना चाहते हो, जिनके पिता नहीं हैं। तुम तो अपने निज मित्र को भी बेच डालोगे।

28	וְֽעַתָּה	הוֹאִ֣ילוּ	פְנוּ־	בִ֑י	וְעַל־	פְּ֝נֵיכֶ֗ם	אִם־	אֲכַזֵּֽב׃
	और-अब	चाहो	मुड़ो-	मुझमें	और-पर-	तुम्हारे-मुँह	यदि-	मैं-झूठ-बोलता-हूँ
	H6258	H2974	H6437			H6440		H3576

किन्तु अब मेरे मुख को पढ़ो। मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूँगा।

29	שֻֽׁבוּ־	נָ֭א	אַל־	תְּהִ֣י	עַוְלָ֑ה	]ושבי[	)וְשׁ֥וּבוּ(	ע֝֗וֹד	צִדְקִי־	בָֽהּ׃
	लौटो-	कृपया	मत-	हो	अन्याय	और-लौटो	और-लौटो	अभी	मेरी-धार्मिकता-	उसमें
	H7725	H4994	H0408	H1961		H7725	H7725	H5750	H6664	

अत:, अपने मन को अब परिवर्तित करो। अन्यायी मत बनो, फिर से जरा सोचो कि मैंने कोई बुरा काम नहीं किया है।

30	הֲיֵשׁ־	בִּלְשׁוֹנִ֥י	עַוְלָ֑ה	אִם־	חִ֝כִּ֗י	לֹא־	יָבִ֥ין	הַוּֽוֹת׃
	क्या-है-	मेरी-जीभ-पर	अन्याय	या-	मेरा-तालू	नहीं-	समझता-है	विपत्तियों
	H3426	H3956			H2441	H3808	H0995	H1942

मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ। मुझको भले और बुरे लोगों की पहचान है।”